

## पद ८४

(राग: परज - ताल: दादरा)

नाहीं आम्हां दृश्यबंध हो। आम्ही ब्रह्म हो अहं ब्रह्म हो॥ध्रु॥  
सूक्ष्म देह जल कुंभ हो, आत्मबिंब हो। प्रतिबिंब हो बिंबा बंध

मोक्ष दंभ हो, निरालंब हो, मोक्षस्तंभ हो॥ (चाल) आत्मप्रकाशें  
शिव जीव भासे। वाच्यांश नासें लक्ष्यांश गवसे। हेंचि महावाक्य  
वर्म हो। आम्ही ब्रह्म हो॥१॥ बोध भाग्य झेंडा मिरविला, संत  
सोहळा, चिन्मार्ताण्ड हा उगवला। मोह फांतला हर्ष मातला॥  
(चाल) जलिं बुद्बुद बुद्बुदीं जल हें। ब्रह्मी दृश्य हें दृश्यीं ब्रह्म  
हें। सकलमता हाचि धर्म हो। आम्ही ब्रह्म हो॥२॥